छहढाला

रचयिता - पण्डित दौलतरामजी

Presentation created by-
Sarika Chhabra

fppt.com

मंगलाचरण

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता |
शिवस्वरूप शिवकार, नम्हूं त्रियोग सम्हारिके ॥

fppt.com

ग्रंथ प्रारंभ करने के पूर्व जानने योग्य 6 बातें:

ग्रंथ का नाम	• छहढाला
ग्रंथ के रचयिता	• पण्डित दौलतरामजी
मंगलाचरण में किसे नमस्कार किया गया है:	• वीतराग विज्ञानता
ग्रंथ का प्रमाण	• ९६ छंद, ६ अधिकार
निमित्त	• भव्य जीवों के निमित्त
हेतु	• मोक्ष प्राप्ति हेतु

fppt.com

मंगलाचरण करने के कारण

1. ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये
2. शिष्टाचार के पालन के लिए
3. नास्तिकता का परिहार के लिए
4. उपकार का स्मरण करने के लिये

fppt.com

छहढाला का अर्थ

ढाल = तलवार आदि के वार से रक्षा के लिये

- मिथ्यात्वादि शत्रु से आत्मा की रक्षा के लिये

6 अधिकार

6 छंद (लय)

छहढाला में 3 मुख्य बातों का वर्णन है

१ ढाल	१. दुख क्या है?
२ ढाल	२. दुख का कारण क्या है?
३,४,५,६ ढाल	३. दुख से छूटने के उपाय क्या हैं?

fppt.com

ढाल न.	छन्द संख्या	छन्द प्रकार	विषय वस्तु
1	17	चौपाई	मिथ्यात्व के कारण ४ गतिओं में भ्रमण से दुःख
2	15	पद्धरी	मिथ्या- दर्शन,ज्ञान, चारित्र का वर्णन
3	17	जोगीरासा	मोक्षमार्ग का स्वरूप,सम्यग्दर्शन का वर्णन
4	15	रोला	सम्यक-ज्ञान, चारित्र, व्रती श्रावक का वर्णन
5	15	छन्द्वाल	१२ भावनाओं का स्वरूप
6	17	हरिगीतिका	मुनि से भगवान बनने का उपाय, २८ मूलगुण, स्वरुपाचरण चारित्र का वर्णन
Total	96		

पहली ढाल की विषय वस्तु

छन्द	विषय वस्तु
1 – 3	मंगलाचरण, शिक्षा सुनने का उपदेश, संसार परिभ्रमण का कारण
4 – 9	तिर्यंच गति के दुख और प्राप्ति के कारण
10 – 13	नरक गति के दुख और प्राप्ति के कारण
14 – 15	मनुष्य गति के दुख और प्राप्तिके कारण
16 - 17	देव गति के दुख और प्राप्तिके कारण

fppt.com

मंगलाचरण

fppt.com

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता |
शिवस्वरूप शिवकार, नमहूं त्रियोग सम्हारिके ॥

- वीतराग = राग द्वेष से रहित (18 दोषों से रहित)
- विज्ञानता = विशिष्ट ज्ञान (केवलज्ञान)
- शिवस्वरूप = आनंद स्वरूप
- शिवकार = मोक्ष प्राप्त कराने वाला
- नमहूं = करता हूं
- त्रियोग = तीनों योग
- सम्हारिके = संभाल कर

fppt.com

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता |
शिवस्वरूप शिवकार, नमहूं त्रियोग सम्हारिके ॥

- राग-द्वेषरहित ‘‘केवलज्ञान’’
- ऊर्ध्व, मध्य और अधो इन तीन लोकों में
- उत्तम, आनन्दस्वरूप तथा मोक्षदायक है,
- इसलिये मैं (दौलतराम) अपने त्रियोग अर्थात् मन-वचन-काय द्वारा सावधानी पूर्वक
- उस वीतराग स्वरूप केवलज्ञान को नमस्कार करता हूँ ॥1 ॥

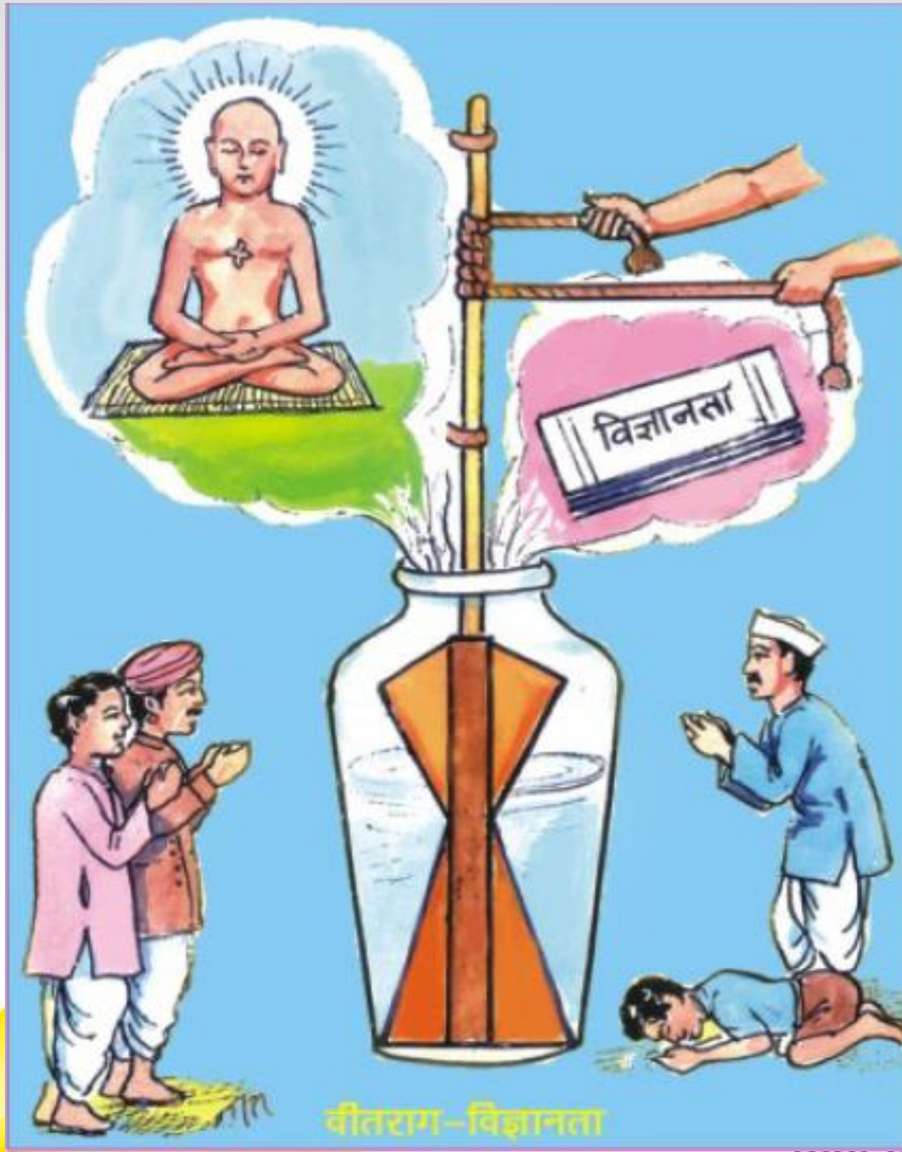

ippt.com

वीतराग	• सम्यक्चारित्र
विज्ञान	• सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान
वीतराग विज्ञान	• मोक्षमार्ग • शिवस्वरूप

fppt.com

वीतराग विज्ञानता कैसी है?

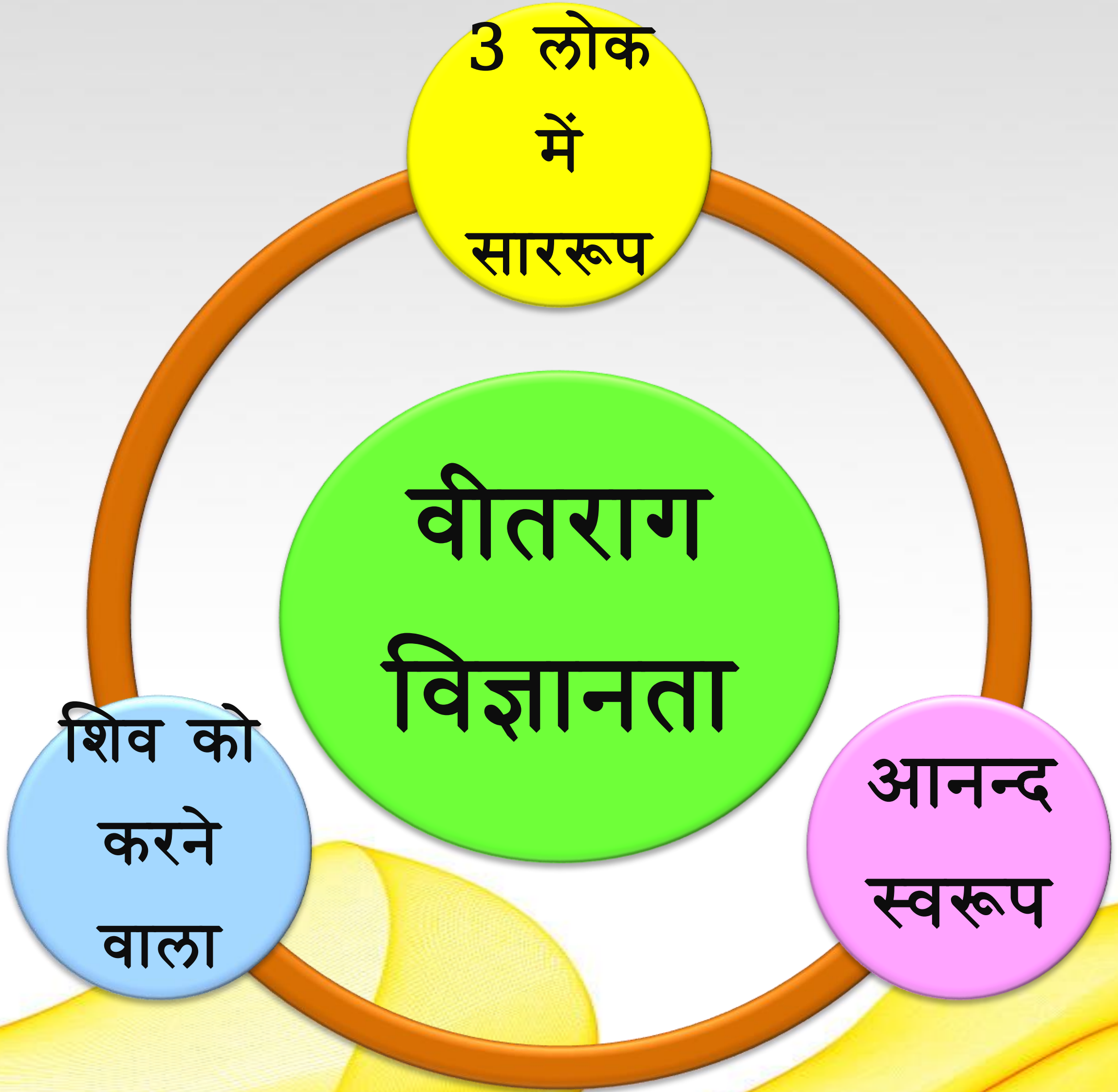

fppt.com

वीतरागी में नहीं पाये जाने वाले 18 दोष

1. जन्म
2. बुढ़ापा
3. प्यास
4. भूख
5. विस्मय
6. अरति
7. खेद
8. रोग
9. शोक
10. मद
11. मोह
12. भय
13. निद्रा
14. चिन्ता
15. स्वेद
16. राग
17. द्वेष
18. मरण

fppt.com

ग्रन्थ रचना का उद्देश्य और जीवों की इच्छा

fppt.com

जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहैं दुखतैं भयवन्त ।
तातैं दुखहारी सुखकार, कहैं सीख गुरु करुणा धार ॥2 ॥

- जे = जो
- त्रिभुवन में= तीनों लोकों में
- जीव= प्राणी
- चाहैं= इच्छा करते हैं
- दुखतैं= दुःख से
- भयवन्त= डरते हैं
- तातैं= इसलिये
- दुःखहारी= दुःख का नाश करनेवाली
- सुखकार= सुख को देनेवाली
- कहैं= कहते हैं
- सीख= शिक्षा
- गुरु= आचार्य
- करुणा= दया
- धार= करके

fppt.com

जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहैं दुखतैं भयवन्त ।
तातैं दुखहारी सुखकार, कहैं सीख गुरु करुणा धार ॥2॥

- तीन लोक में जो अनन्त जीव (प्राणी) हैं,
- वे दुःख से डरते हैं और
- सुख को चाहते हैं; इसलिये
- आचार्य दुःख का नाश करनेवाली तथा सुख को देनेवाली शिक्षा देते हैं ॥2 ॥

fppt.com

सुख-दुख

सुख	दुख
इन्द्रियजन्य	आगंतुक
मानसिक	मानसिक
प्रशमोत्पन्न	शारीरिक
आत्मोत्पन्न	स्वाभाविक

fppt.com

गुरु शिक्षा सुनने का आदेश तथा संसार-परिभ्रमण का कारण

fppt.com

ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहो अपनो कल्यान ।
मोह महामद पियो अनादि, भूल आपको भरमत वादि ॥3 ॥

- ताहि = गुरु की वह शिक्षा
- भवि = हे भव्यजीवो!
- थिर = स्थिर
- आन = करके
- जो = यदि
- चाहो =चाहते हो
- अपनो= अपना
- कल्यान = हित
- मोह महामद = मोहरूपी महामदिरा
- पियो = पीकर
- अनादि = अनादिकाल से
- भूल = भूलकर
- आपको = अपने आत्मा को
- भरमत = भटक रहा है ।
- वादि = व्यर्थ

fppt.com

**ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहो अपनो कल्यान ।
मोह महामद पियो अनादि, भूल आपको भरमत वादि ॥3 ॥**

- ❖ हे भद्र (भव्य) प्राणियो! यदि अपना हित चाहते हो तो अपने मन को स्थिर करके यह शिक्षा सुनो ।
- ❖ यह जीव अनादिकाल से मोहमदिरा से फँसकर,
  - ❖ अपनी आत्मा के स्वरूप को भूलकर
  - ❖ चारों गतियों में जन्म-मरण धारण करके भटक रहा है ॥3 ॥

fppt.com

भव्य

→ जो सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की योग्यता रखता है

निकट भव्य

शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करेगा

दूर भव्य

कुछ समय बाद मोक्ष प्राप्त करेगा

दूरान्दूर भव्य

योग्यता होने पर भी जो मोक्ष नहीं प्राप्त करेगा

fppt.com

मोह

जो आत्मा को मूर्च्छित करे,

स्व-पर विवेक को भुला दे

मोह महामद

fppt.com

जीव क्यों भ्रमा?

- भूल से

किसकी भूल से?

- अपनी

कौन सी भूल?

- अपने स्वरूप को भूला और पर को अपना माना

यह भूल मिटे कैसे?

- स्व-पर का भेद ज्ञान करने से

fppt.com

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 0731-2410880

fppt.com